कृण्वन्तो विश्वमार्यम् यतेमहि स्वराज्ये
website : www.chintanresearchjournal.com ISSN : 2229-7227
Impact Factor : 4.012

International Refereed

चिन्तन

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
(Indexed & Listed at : UGC Journal List No.41243)
(Peer Reviewed)

वर्ष : 9 अंक : 33(III)
विक्रमी सम्वत् : 2076
जनवरी–मार्च 2019

संपादक
आचार्य (डॉ०) शीलक राम

आचार्य अकादमी, भारत
ISO 9001 : 2008

भारतीय इतिहास में मानवीय-मूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता
डॉ॰ कुलदीप सिंह 104–109
अलाउद्दीन खिलजी की राज्य व्यवस्था का सामाजिक आयम
डॉ॰ बबलू ठाकुर **110-113**
भारतीय जनता पार्टी की लोकतंत्र मेंभूमिका : आलोचनात्मक पक्ष
उमंगिका **114-118**
A Study of "Fundamental Rights And Bhikari Dusad" as an Emblematic of Social Oppression
Dr Shikha Goyal **119-124**
Appointment in Higher Judiciary and Judicial Independence
Sunil Kumar Sharma **125-132**
Scientific and Technological Development in Ancient India
Mamta Rani **133-137**
नेपाली की काव्य चेतना
डॉ॰ दिवाकर चौधरी **138-144**

International Refereed
UGC List No.41243
Impact Factor : 4.012
'चिन्तन' अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल (ISSN: 2229.7227)
वर्ष 9, अंक 33(III) (पृ.सं. 138-144)
विक्रमी सम्वत्: 2076 (जनवरी-मार्च 2019)

नेपाली की काव्य चेतना

डॉ० दिवाकर चौधरी
नेट-जे.आर.एफ हिन्दी
बी०आर०ए० बिहार विश्वविद्यालय

शोध-आलेख सार

काव्य-चेतना से तात्पर्य कवि की उस वृत्ति या सृजनात्मक षक्ति से है, जिसके माध्यम से वह जीवन-जगत से अनुभूत सत्य का उद्घाटन अपनी रचना में कर पाता है। डॉ. बलराम मिश्र के अनुसार-"बाह्य को अंतर्जगत में आत्मसात् करना ओर इस आत्मसात् अंतर्जगत को पुनः बाह्य जगत को सौंप देना ही कवि कर्म है। इस प्रक्रिया को काव्य -रचना कहते है और इस कर्म के प्रति सचेष्ट होना, पूर्ण व्यक्तित्व के साथ इस कर्म-भाव में समर्पित हो जाना ही काव्य -चेतना है।" 'नेपाली' उत्तर छायावाद के प्रतिनिधी और बहुमुखी प्रतिभा-संपन्न रचनाकार थे। इसलिए उनकी काव्य चेतना एकमुखी नहीं, अपितु बहुमुखी है। तथापि उनके काव्य के गंभीर अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि प्रकृति, प्रेम और राष्ट्रीयता उनके काव्य की मूल चेतना है। सौन्दर्य, मानवता, यतार्थ, भक्ति, प्रगतिशीलता, आत्मबोध, राजनीति, प्रयोगषीलता, संस्कृति-विमर्श, स्त्री-विमर्श, इत्यादि उनकी काव्य-चेतना के अन्य स्वर हैं।

मुख्य-शब्द : आत्मबोध, स्त्री-विमर्श, काव्य-सृजन, छायावाद, भावबोध ।

काव्य-चेतना से तात्पर्य कवि की उस वृत्ति या सृजनात्मक षक्ति से है, जिसके माध्यम से वह जीवन-जगत से अनुभूत सत्य का उद्घाटन अपनी रचना में कर पाता है। डॉ. बलराम मिश्र के अनुसार-"बाह्य को अंतर्जगत में आत्मसात् करना ओर इस आत्मसात् अंतर्जगत को पुनः बाह्य जगत को सौंप देना ही कवि कर्म है। इस प्रक्रिया को काव्य -रचना कहते है और इस कर्म के प्रति सचेष्ट होना, पूर्ण व्यक्तित्व के साथ इस कर्म-भाव में समर्पित हो जाना ही काव्य -चेतना है।"[1] 'नेपाली' उत्तर छायावाद के प्रतिनिधी और बहुमुखी प्रतिभा - संपन्न रचनाकार थे।इसलिए उनकी काव्य चेतना एकमुखी नहीं, अपितु बहुमुखी है। तथापि उनके काव्य के गंभीर अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि प्रकृति, प्रेम और राष्ट्रीयता उनके काव्य की मूल चेतना है। सौन्दर्य, मानवता, यतार्थ, भक्ति, प्रगतिशीलता, आत्मबोध, राजनीति, प्रयोगषीलता, संस्कृति-विमर्श, स्त्री-विमर्श, इत्यादि उनकी काव्य-चेतना के अन्य स्वर हैं।

प्रकृति-चेतना

प्रकृति के सानिध्य में उनका बचपन व कैशोर्य बीता था । अतः प्रकृति के प्रति उनकी चेतना आद्यांत मुखर रही है। उनके काव्य-सृजन का अधिकांश प्रकृति को समर्पित है। प्रकृति का मानव-जीवन में अमूल्य योग रहा है । प्रकृति जीवन और साहित्य का प्रमुख उपादान रही है । साहित्य के क्षेत्र में प्रकृति - चित्रण का विषेष महत्त्व है। विश्व की प्रत्येक भाषा-साहित्य में इसकी विस्तृत परम्परा मिलती है। प्रकृति-चित्रण की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति संस्कृत-साहित्य में हुई है और महाकवि कालिदास इसके श्रेष्ठतम प्रस्तोता के रूप में याद किये

जाते है। उनके काव्य में प्रकृति अपनी सुषमा से ओत्- प्रोत् अत्यंत कमनीय रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होती है।खड़ीबोली हिन्दी- साहित्य में भी आदिकाल से 'आधुनिककाल' तक प्रकृति-चित्रण की विस्तृत परम्परा के दिग्दर्शन होते हैं। हिन्दी के विकास के साथ ही हिन्दी - साहित्य का प्रकृति-चित्रण भी उतरोत्तर सूक्ष्म, संश्लिश्ट और परिष्कृत होता गया है । इस दृष्टि से 'छायावाद' हिन्दी-साहित्य का सबसे महत्त्वपूर्ण काल माना जाता है और 'प्रकृति के सुकुमार कवि' पंत इसके सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं। हिन्दी -साहित्य में छायावाद पहला काल है जिसमें प्रकृति इतनी सहज, मनोरम, कमनीय, माधुर्ययुक्त और नैसर्गिक आकर्षण - संपूरित होकर साहित्यिक मंच पर उतरती है तथा अपनी स्वच्छंदता और प्रकृति सौन्दर्य से मर्मज्ञों को अभिभूत कर देती है। छायावाद के उपरांत प्रकृति एक नवीन भावबोध के साथ नवीन कलेवर में, स्वाभाविक षोभायुक्त होकर पूर्व से ज्यादा सहज सौन्दर्यपूर्ण होकर अपने विविध आयामी स्वरूप में उपस्थित होती है और कवि-गीतकार गोपाल सिंह 'नेपाली' इसके अन्यतम उद्गाता के रूप में साहित्य-पटल पर पटाक्षेप करते हैं। इनके काव्य में प्रकृति, प्रेम और राष्ट्रीयता की नैसर्गिक त्रिवेणी प्रवाहित होती है, जो हृदय को बरबस अपनी ओर खींच लेती है। कवि की इस प्रवृत्ति को लक्ष्य कर 'पंतजी' ने लिखा है -''आपका कवि-कंठ ' निर्मल निर्झर के समान' अवश्य ही मंसूरी की तलहटी में फूटा होगा । इसलिए आपकी रचनाओं में जो उन्मुक्त वातावरण एवं स्निग्ध अनिलाताप मिलता है, वह पाठक के हृदय की खिड़की खोलकर 'नरम दूब बिछी राहों से, विलास की मंसूरी' से 'जंगल की मंसुरी' में ले जाकर, प्रकृति की मनोरम क्रीड़ा -भूमि में छोड़ देता है, जहाँ 'जंगल की हरियाली अंचल पसार ' कर उसका स्वागत करती है।'जामुन तमाल इमली करील, उपर विस्तृत नभ नील -नील' उँचे टीले ' 'गिलहरियों के घर'मन को मोहते है। पीले-पीले लाल-लाल, फल-फुल मुकुल से लदी डाल' में मधुप गुनगुन' फुलचुग्गी रूनझुन ' करती बुलबुल-सुग्गे चुन-चुन' फल खाते है।जहाँ 'द्रुम में दाड़िम गोल-गोल, सेव, किशमिश, अनार से भी मीठे देहरादून के मधुर बेर खाने को मिलते है। जहाँ झीलों में जल, जल में मृणाल है। घर बसाने की प्रतीक्षा में डालों पर बैठे पक्षियों के जोड़े 'चोंचों से पर सुहला-सुहलाकर, प्रेम विह्वल हो कल-कूज करते है।''[2]

हिन्दी-साहित्य में 'पंत के बाद -नेपाली को उनके प्रकृति -चित्रण के लिए सबसे पहले याद किया जाता है । प्रकृति का नेपालीजी के जीवन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है । स्वयं कवि के शब्दों में - ''यह हरी-हरी दूब की ही महिमा है कि आज मेरे हाथ में बंदुक के बदले लेखनी है।''[3] नेपाली की काव्य-चेतना जीवन के सहज सौन्दर्य-बोध से जुड़ी है।जिसकी सर्वाधिक जीवंत प्रस्तुति उनके प्रकृति -काव्य में द्रष्टव्य है। इनपर प्रकृति का अनन्य प्रभाव है । ये प्रकृति सौन्दर्य के अन्यतम उद्गाता हैं । प्रकृति इनके काव्य को आद्योपांत आच्छादित किये है। कवि का साहित्य -सुमन प्रकृति की नैसर्गिक सुषमा के बीच पल्लवित -पुष्पित होता है । प्रकृति को कवि ने श्रेष्ठतम स्थान दिया है तथा प्रकृति और प्रेम की श्रेष्ठता को रेखांकित करते हुऐ लिखा है-

''जीवन में क्षण-क्षण कोलहाल,
ज्यों सुख त्यों दुखः, सुख-दुखः समान
आती संध्या जाता विहान,
जाती संध्या आता विहान
इसलिए जगत में दो ही तो
कुछ शांति कभी देनेवाले
है एक प्रकृति की मृदुल गोद,
दुसरा प्रेम का मधुर गान ।।''[4]

नेपाली की प्रकृति-चेतना का परिदृश्य बहुत व्यापक है । उसमें नैसर्गिक सौन्दर्ययुक्त प्राकृतिक दृश्यों

की भरमार है । प्रकृति उनके काव्य में विविध आयामी स्वरूप में अभिव्यक्त है । वे सिर्फ प्रकृति का वर्णन ही नहीं करते वरन् उसके महत्व को रेखांकित भी करते हैं।

प्रेम-चेतना

'प्रेम' नेपालीजी की काव्य -चेतना का दूसरा प्रतिपाद्य है। इनके काव्य में प्रेम की संश्लिष्ट अभिव्यक्ति हुई है। प्रेम को नेपालीजी ने श्रेष्ठतम दर्जा दिया है और उसकी महिमा का उद्घोष किया हैं। उनका प्रेम युवा कवि की भावुकता का उच्छलन नहीं वरन् संपूर्ण मानव जाति के लिए उपादेय जीवन दृश्टि है। जिसकी प्रासंगिकता वर्तमान संदर्भों में और बढ़ जाती है। उनकी दृश्टि में प्रेम जीवन को सर्वांगपूर्ण तो करता ही है, साथ ही संसार-सागर को पार करने का एकमात्र माध्यम भी है-

"किन्तु देव, कब समझोगे, है
यही स्वर्ग, जीवन, संसार
यही पुण्य है एक जगत का
उतरेंगे इससे ही पार।।"[5]

राष्ट्रीय चेतना

नेपाली जी की राष्ट्रीय चेतनामुलक रचनाएँ जहाँ एक ओर परतंत्र भारत की जनता में दासत्वमुक्ति की जिजीविषा उत्पन्न हैं तो वही दूसरी ओर स्वातंत्रयोत्तर भारत के नवनिर्माण के लिए नवयुवकों का आह्वान, नविन कल्पना के लिए उत्प्रेरित भी करती हैं तथा पड़ोसी आक्रमण के संभावित खतरो से भी आगाह करते हैं-

"हुआ देश की खातिर जनम है हमारा
कि कवि हैं तड़पना करम है हमारा
कि कमजोर पाकर मिटा दे न कोई
इसी से जगाना धरम है हमारा ।।"[6]

सौन्दर्य-चेतना

कवि स्वभाव से ही सौन्दर्य प्रिय होता है । नेपालीजी की काव्य-चेतना में भी सौन्दर्य -चेतना समाहित है । उन्होनें नारी और प्रकृति दोंनो के सौन्दर्य को अभिव्यक्ति दी है।

नारी - सौन्दर्य :

"सुमुखी तुम्हारे रूप-दीप में
भरा हुआ इतना प्रकाश था
चहुँ दिशि छाए अन्धकार से
था जीवन में ऊब गया मैं
बही तुम्हारी ज्यातिर्धारा
सहसा उसमें डूब गया मैं
जब उतराया मैं तरंग पर
मंत्र-मुग्ध हो मैंने देखा
काँप रहे तेरे अधरो पर
खेल रहा स्वर्णिम सुहास था
मेरे जीवन की सन्ध्या में तुम
झिलमिल तारा बन आइ
मधुर तुम्हारी रूप-सुधा से
झूम उठी मेरी परछाई

किसने मरे षून्य कक्ष में
यह दीपक रख दिया जलाकर
किसकी ज्योती-लहर में मेरा
डूब रहा कल्पनाकाश था ।।"[7]

प्रकृति -सौन्दर्य

"पीपल के पत्ते गोल - गोल
कुछ कहते रहते डोल-डोल
जब - जब आता पंछी तरू पर,
जब - जब जाता पंछी उड़कर
जब-जब खाता फल चुन-चुनकर
पड़ती जब पावस की फुहार,
बजते जब पंछी के सितार
बहने लगती श्शीतल बयार
तब-तब कोमल पल्लव हिल-डुल,
गाते सर्सर, मर्मर मंजुल
लख-लख, सुन-सुन विह्वल बुलबुल
बुलबुल गाती रहती चह-चह
सरिता गाती रहती बह-बह
पत्ते हिलते रह-रह ।।"[8]

भक्ति या ईश्वरीय चेतना :

नेपालीजी के काव्य में काव्य में भक्ति चेतना भी अभिव्यक्त है । वे ईश्वर को सृष्टी के कण-कण में विद्यमान मानते हैं। यहाँ तक कि स्वयं की सृजनात्मकता को ईश्वर की देन मानते हैं-

"रूप, गंध, रस लेकर तुमसे
कवि ने दुनिया नई बना ली
शब्द-शब्द की स्वर-लहरी में
कवि की कृति उपकरण तुम्हारा।।"[9]

मानवीय चेतना

मानवीय चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति नेपालीजी के काव्य में हुई है। वे एक जनकवि थे। मानवता के सबल समर्थक और पक्षधर कवि थे। मानव की समानता की मांग करते हुए उन्होंने लिखा है -

"मकान हो, मनुष्य पाँव तो पसार रह सके
कि वस्त्र हो, कि जिन्दगी सजा संवार रह सके
स्वतंत्रता रहे किदर्द लिख सके कि कह सके
विधान हो कि राज भी कभी नहीं सके सता
मनुष्य मांगता यही, यही मनुष्य मानता
कि हो समाज राज में, मनुष्य कि समानता।।"[10]

दीन, संतप्त और हताश समुदाय की समस्याओं की ओर ध्यानाकर्षन करते हुए उनकी मुक्ति के लिए, मानव की मुक्ति, सुख और उद्धार के लिए मानव का आह्वान करते हैं -

"अपने साथ समस्त जग का,
मानव, अब उद्धार करो तुम
छोड़ चले मझधार जिसे सब
उस बेड़े को पार करो तुम ।।"[11]

यथार्थ- चेतना :

कवि की काव्य-चेतना युगीन यथार्थ से संपृक्त है। जब उन्होनें देखा कि आजाद भारत में जहाँ एक ओर कुछ ऐशो-आराम की जिंदगी बसर कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर गरीबी और भूख है तो वे चुप न रह सके, क्योंकि उनकी मान्यता थी कि-

"हर क्रांति कलम से षुरू हुई सम्पूर्ण हुई
चट्टान जुल्म की, कलम चली तो चूर्ण हुई
हम कलम चला कर त्रास बदलने वाले हैं
हम तो कवि हैं इतिहास बदलने वाले हैं ।।"[12]

उन्हें इस बात की तकलीफ थी कि -

"खा-खा के मरती है दुनिया
कितने बेखाए जीते हैं।।"[13]

प्रगतिशील चेतना :

नेपाली की काव्य-चेतना प्रगतिशीलता से ओत-प्रोत है। उनके प्रथम काव्य-संग्रह उमंग में ही उनकी प्रगतिशील चेतना के दर्शन होते हैं-

"हैं यौवन हम हैं जीवन हम,
हैं यौवन के उन्माद हमीं
जो हिला-डुला दे दुनिया को
उस विप्लव के सिंहनाद हमीं
जिस पर अवलंबित क्रांति प्रबल
वह पत्थर की बुनीयाद हमीं
जिसमें है साहस षक्ति भरी
वह ब्रह्मा की ईजाद हमीं ।।"[14]

राजनीतिक चेतना :

साहित्य और राजनीति में गहरा सम्बन्ध होता है। दोनों ही समाज-सापेक्ष होते हैं । राजनीति समाज को प्रभावित करती है और साहित्य अपने समय-सन्दर्भों के विवेचन-क्रम में उस प्रभाव की प्रतिक्रिया देता है। नेपाली मूलत: प्रेम और प्रकृति के कवि हैं । किन्तु अपने समय-सन्दर्भ और जनता से जुड़ाव होने के कारन उनकी राजनीतिक चेतना अत्यंत प्रखर है। अपने प्रथम काव्य-संग्रह उमंग (1934) से अन्तिम काव्य-संग्रह "हिमालय ने पुकारा " (1963) तक, लगभग प्रत्येक राजनीतिक हलचल के प्रति उनकी स्पष्ट प्रतिक्रिया उनके काव्य में दर्ज है। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान की हर हलचल की काव्यात्मक अभिव्यक्ति नेपाली के काव्य में उपलब्ध है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

"मानचित्र भारत का अंकित कृषकों की कृश काया में
सब रहस्य है छिपा हमारी इस निद्रा की माया में
जाकर देखो, कैसे कतता सूत प्रेम का विमल-विमल
पूने में यरबदा जेल में, तरू रसाल की छाया में।।"[15]

भारत के अहिंसक आंदोलनों और अंग्रेज सरकार के दमनात्मक रवैये का चित्रण करते हुए कवि ने लिखा है -

"है अपूर्व यह युद्ध हमारा, हिंसा की न लड़ाई है
नंगी छाती की तोपों के उपर विकट चढ़ाई है
तलवारों की धार मोड़ने गर्दन आगे आई है
सिर की मारों से डण्डों की होती यहाँ सफाई है।"[16]

प्रयोगशीलता :

नेपालीजी के काव्य में प्रारंभ से ही प्रखर प्रयोगशीलता के दर्शन होते हैं। इसका प्रथम रूप उनकी मौलिक उद्‌भावनाओं में दिखता है । घास, पीपल, बेर जैसे विषय को काव्य - विषय बनाकर उन्होंने अपनी प्रयोग दक्षता का परिचय दिया है।नेपालीजी ने इस सन्दर्भ में लिखा है कि - "हरी घास पर नानक के एक छोटे से दोहे को छोड़कर, हिन्दी में और कविता नहीं है। पंडित सोहनलाल द्‌विवेदी का कहना कि अगर मैं सिर्फ यही कविता लिखकर मर जाता, फिर भी अमर रहता।"[17]

अपनी दूसरी काव्यकृति पंक्षी में उन्होंने प्रेम के मनाविज्ञान को दृष्ट कर अपनी प्रयोगशीलता का साक्ष्य दिया है । कुछ पंक्तियां द्रष्टव्य हैं -

"प्रेम की यह कामना, पत्थर, तनिक तो बोल दे
षैल बन, पाषाण बन, पर आज बंधन खोल दे
प्रेम की यह भावना रे, उड़ न पंछी, डाल से
मोह है कितना मधुर जग-जाल से जंजाल से
प्रेम की यह भूमिका वाचालता भी मौन है
कौन है बहरा यहाँ, गूँगा यहाँ पर कौन है।।"[18]

नेपालीजी ने रचनात्मक और भाषिक, दोनों ही स्तरों पर अपनी प्रयोगशील काव्य-चेतना का परिचय दिया है। रचनात्मक स्तर पर प्रकृति के अनावृत और सहज सौन्दर्य, प्रकृति का विभिन्न सन्दर्भो में सम्यक प्रयोग आदि द्रष्टव्य हैं । भाषिक स्तर पर नवीन बिम्ब -विधान, विशेषण के रूप प्रकृति का प्रयोग, ठेठ ग्रामीण षब्दों का सुष्ठु प्रयोग मन को मोहते हैं ।

स्त्री विमर्श :

नेपालीजी की काव्य-चेतना में स्त्री के प्रति सम्मान का भाव है । साथ ही गार्हस्थ जीवन की धुरी नारी की महत्ता को स्थापित करने का प्रयास भी -

"आधी दुनिया मैं हूँ
आधी तुम हो मेरी रानी
तुमने हमने मिलकर कर दी
पूरी एक कहानी।।"[19]

नारी उनके लिए सिर्फ वासना का साधन नहीं है, अपितु वह कवि षक्ति का अजस्र स्रोत भी है -

"मैं षक्ति तुम्हीं से पाता हूँ
नव ज्योति तुम्ही से मिलती है।।"[20]

नेपालीजी काव्य-चेतना अपने समय-सन्दर्भो से पूर्णत: जुड़ी हुई और अत्यंत प्रखर है । उन्होंने अपने समय की हर समस्या का वर्णन और समाधान की रचनात्मक पहल की हैं। उनकी काव्य-चेतना ने अपने समय की हर उस विषय को चित्रित किया जो प्रासंगिक है।

संदर्भ----------

1. डॉ. राय सतीश कुमार सं. नेपाली : चिन्तन -अनुचिन्तन, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, पृष्ठ -354
2. पंत सुमित्रानंदन, स्नेह -शब्द, उमंग, सं.-नंदन नंदकिशोर, राजदीप प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -2011, पृष्ठ -07
3. नेपाली गोपाल सिंह, स्वर-संधान, रागिनी, सं.-नंदन नंदकिशोर, राजदीप प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2011, पृष्ठ -05
4. उमंग, कविता:नौका -विहार, सं.-नंदन नंदकिशोर, राजदीप प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करन-2011, पृष्ठ -66
5. उमंग, कविता:नौका -विहार, सं.-नंदन नंदकिशोर, राजदीप प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करन-2011, पृष्ठ -66
6. हिमालय ने पुकारा, कविता:नजर है नई तो नजारे पुराने, सं.-नंदन नंदकिशोर, साहित्य-संसद, नई दिल्ली, संस्करन-2011, पृष्ठ-85
7. पंचमी, रूप-दीप, सं.नंदन नंदकिशोर, साहित्य-संसद, 2011, पृष्ठ-41
8. उमंग, पीपल, सं.-नंदन नंदकिशोर, राजदीप प्रकाशन, 2011, पृष्ठ-33
9. पंचमी, वन्दनागीत, सं. -नदन नंदकिशोर, साहित्य-संसद, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ-30
10. हिमालय ने पुकारा, मनुष्य की समानता, सं.नंदन नंदकिशोर, साहित्य-संसद, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ-70
11. नीलिमा, देख रहे हैं महल तमाशा, सं.-नंदन नंदकिशोर, पुस्तक भवन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ-70
12. ओम निश्चल, विस्मृति के धुधलके में नेपाली, आजकल, सं.-सीमा ओझा, नवंवर 2011, पृष्ठ-12
13. डॉ. बलराम मिश्र, परिषद् -पत्रिका, अंक-अप्रैल 1999से मार्च 2000, पृष्ठ-70
14. उमंग, युगांतर, सं.-नंदन नंदकिशोर, राजदीप प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ-18
15. उमंग, सत्याग्रह, सं.-नंदन नंदकिशोर, राजदीप प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ-83
16. नेपाली : चिन्तन-अनुचिन्तन, सं.-डॉ राय सतीश कुमार, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, 2011, पृष्ठ-140
17. नेपाली : चिन्तन-अनुचिन्तन, सं.-डॉ राय सतीश कुमार, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, 2011, पृष्ठ-189
18. नीलिमा, दबे पाँव तुम आई रानी, सं.-नंदन नंदकिशोर, पुस्तक भवन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ-49
19. नीलिमा इस तरह उचककर तुम न डरो, सं. -नंदन नंदकिशोर, पुस्तक भवन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ-189
20. इस तरह उचककर तुम ना डरो, शीर्षक कविता, नीलिमा, संपादक-नंदकिशोर नंदन, पुस्तक भवन, , नई दिल्ली, संस्करन-2011, पृष्ठ-47